आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:24-12-14

हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देने वाले, ज्ञान-सागर बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - विनाश होने से पहले तुम्हें सबको बाप का परिचय देना है और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय देना है. तुम भी स्वयं को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करते हो कि तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप कट जाएं. जब तक बाप तुम्हें पढ़ाते रहते हैं, तुम्हें बाप को याद जरूर करना है. फिर धारणा कर और दूसरों को समझाना भी है - इस पर ही तुम्हें नई दुनिया में पद मिलता है.

यह तो हम सब ब्राह्मण आत्माये जानती है कि बाबा ने आकर हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अन्त का सारा ज्ञान दिया है. बाबा ने संगम पर इस ज्ञान-रुद्र-यज्ञ की स्थापना भी इसलिए ही कि है कि जिसे विश्व की सर्व आत्माओं को रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान मिले. लेकिन बाप तो सब जगह जाकर सबको ज्ञान नहीं देगा, इसलिए यह कार्य वह हम बच्चों से करवाता हैं. और इसके बदले में वह हमें स्वर्ग में २१ जन्म के लिए ऊंच पद प्राप्त कराते हैं. इसमें एक बात कि खबरदारी सबको रखनी पड़ती है कि अगर ज्ञान देने वाली आत्मा ही कोई विकार में जाती है तो उसको १०० गुना दंड भोगना होता है. फिर उसे ऊंच पद प्राप्त करने के लिए और भी ज्यादा तीव्र-पुरुषार्थ करना होता है. हमें अपना पद ऊंच बनाने के लिए दूसरों को परमात्मा का परिचय और सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान जरूर देना ही है. लेकिन इसमें मुख्य धारणा है स्वयं को और दूसरों को आत्मा समझकर व्यवहार में आना.

आज की मुरली से परमात्मा का परिचय और सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान पर कहे गये परमात्मा के महा-वाक्यों को फिर से रिपिट करेंगे, जिसे हमें यह ज्ञान दूसरों को देने में मदद मिले.

परमात्मा का परिचय पर कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, तुम यह जानते हो कि बाबा जो ऊपर में थे वह अभी नीचे आये हुए है - तुम सब आत्माओं की बैटरी चार्ज करने. तुम्हारी बैटरी चार्ज होगी बाप को याद करने से. तुम्हें

अब उस निराकार बाप का नाम (शिव), रुप (ज्योति-स्टार), देश (परमधाम) और काल (संगमयुग) सब का पता है. फिर वह साकार में आते है तो इस ब्रहमा का तन लेते है और तुमको रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का सारा राज (razz) समझाते है.

- बाबा कहते है मैं ही इस मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ का बीजरुप हूँ. मैं अति सूक्ष्म हूँ. मेरा ही काम है यहाँ नई सतयुगी दुनिया स्थापन करना. तुम्हें ही मेरी बायोग्राफी का पता है.

- बाबा कहते है मैं ही आकर इस सृष्टि पर आदि सनातन दैवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ. तुम अभी यह जानते हो कि यह ज्ञान के बाद विनाश जरूर होना है. और जो भी धर्म स्थापक आते है, उनके आने पर विनाश नहीं होता है. विनाश का टाइम ही यह है, इसलिए तुमको जो ज्ञान मिलता है वह फिर खलास हो जाता है. तुम अभी रचता और रचना को जान गये हो.

- बाबा कहते है मेरा पार्ट ही है संगम पर आने का. यह ज्ञान तुम्हें एक ही बार संगम पर मिलता है. तुम्हारा यह क्लास एक ही बार चलता है. तुम्हें यह बात अच्छी तरह से समझकर औरों को समझानी है.

- बाबा कहते है मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, सतगुरु भी बनता हूँ. बाप के रुप में तुम्हारी पालना करता हूँ, टीचर के रुप में तुम्हें यह ईश्वरीय पढ़ाई पढाता हूँ फिर सतगुरु के रुप में तुम्हें श्रेष्ठ बनने की श्रीमत् देता हूँ - तुम्हारा वरदानों से श्रृंगार करता हूँ - तुम्हें गति-सद्गति (मुक्ति-जीवनमुक्ति) देता हूँ.

सृष्टि चक्र के ज्ञान पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- बाबा कहते है नाटक जब पूरा होता है तो सब एक्टर्स स्टेज पर आ जाते हैं. अभी सब आत्माये स्टेज पर आ रही हैं. इस सृष्टि कि स्टेज पर कितना घोर घमसान है. कितनी अशान्ति है. सतयुग आदि में इतना घोर घमसान नहीं था. बहुत थोड़ी आत्माये थी. अब तुम्हें सृष्टि चक्र का सारा नॉलेज है कि कैसे तुम्हारा मनुष्य सृष्टि का झाड़ वृद्धि को पाकर फिर खत्म होता है.

- बाबा कहते है तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही यह लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनने की है. तुम जानते हो हम अभी नई दुनिया का प्रिन्स बनेंगे. तुम समझते हो अभी हम संगम पर खड़े हैं, शिवालय में जाने के लिए. बस, अभी गये कि गये. सतयुग में तो राजा रानी तथा प्रजा, सब शिवालय के मालिक बन जाते हैं. वहॉ तो भाषा भी सबकी एक ही रहती है.

- बाबा कहते है तुम बच्चे जानते हो यह बहुत मजे का खेल है. इसमें सुख (सतयुग से द्वापर अन्त तक) भी होता है, तो दुख भी होता है. सारा नाटक तुम्हारी बुद्धि में है. तुम ही इसमें हीरो एक्टर्स हो. तुम्हारा ही ८४ जन्मो का एक्यूरेट अविनाशी पार्ट है.

अन्त में बाप कहते है - बच्चे तुम एक बाप को ही याद करो, प्यार भी उनसे ही करो. याद से पावर बहुत मिलती है. बाप सर्वशक्तिमान है. बाप से ही तुमको इतनी पॉवर मिलती है. तुम कितने बलवान बनते हो. तुम्हारी राजधानी पर कोई जीत पहन न सके. उनको सुखधाम कहा जाता है.

ॐ शांति.

Experience/ Feedback/ Queries to Atma bhai on a.brahmin.soul@gmail.com